तने पर भेदक का प्रकोप

छाल के नीचे सूड़ी

तना भेदक द्वारा बनाये छिद्र की सफाई

गीली मिट्टी का लेप

## प्रबंधन

- बगों को साफ–सुथरा रखना चाहिये तथा संस्तुत कृषि तकनीकियों का उपयोग करना चाहिये।
- लोहे के तार/हुक से प्रभावित छिद्रों से कीटों को यांत्रिक रूप से हटाना चाहिये।
- प्रभावित तनों की छँटाई कर उन्हें नष्ट कर दें। कटे भाग पर 5 प्रतिशत कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (50 ग्राम/लीटर पानी में) का लेप लगाना चाहिये।
- छिद्रों को साफ कर तथा डाइक्लोरवॉस (76 ईसी) के 0.5 प्रतिशत घोल से रूई के फाहे को भिंगो कर छिद्र में डाल कर सभी छिद्रों को मिट्टी के लेप से बन्द कर दें, जिससे रसायन की गैस सभी स्थान पर पहुँच सके।
- मानसून आने पर तने पर क्लोरपाइरीफॉस के 0.04 प्रतिशत (20 ईसी) (2 मि. ली./लीटर पानी के घोल में) का 2 छिड़काव 15 दिनों के अन्तराल पर करना चाहिये।


आलेख : गुंडप्पा एवं बालाजी राजकुमार

विस्तृत जानकारी के लियेसंपर्ककरें :

निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेडा, पोस्ट–काकोरी, लखनऊ – 226 101

फोननं : 0522–2841022/24, फैक्स : 0522–2841025, वेबसाईट : www.cishlko.org,

ई–मेल : cish.lucknow@gmail.com, फोन इन लाइव : 0522–2841082 (प्रत्येक शुक्रवार 10:30 से 4:30 तक)


# आम के तना भेदक कीट का प्रबंधन

## (*बैटोसेरा रूफोमैकुलेटा*)

केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान

रहमानखेडा, पोस्ट – काकोरी, लखनऊ – 226 101

मार्च – 2014

आम का तना भेदक (*बैटोसेरा रूफोमैकुलेटा,* सिरैमबाइसीडी : कोलियाप्टेरा) पूरे देश में आम के बागों में खतरे के रुप में निरन्तर बढता जा रहा है। यह कीट उत्तर प्रदेश के आम उत्पादक क्षेत्र के वृक्षों में व्यापक रूप से व्याप्त है। इस कीट का प्रकोप मलिहाबाद क्षेत्र में भी व्यापक रूप में पाया गया है। बागों के रख–रखाव के अनुसार इसका प्रकोप एक से आठ प्रतिशत तक देखा गया है। प्रभावित वृक्षों में धीरे–धीरे पत्तियॉ पीली पड़ने लगती हैं तथा कीटों से प्रभावित शाखाएँ सूखने लगती हैं। गंभीर प्रकोप होने पर वृक्ष मर सकता है।

## लक्षण

वयस्क बीटल 4 से 6 सें.मी. लम्बा होता है। मई से दिसंबर के मध्य, आम के पुराने वृक्षों के मुख्य तने में यह अंडे देता है (जून–जुलाई के मध्य इसकी संख्या अधिकतम होती है)। वयस्क कीट का नवजात (सूड़ी), छाल के नीचे के हिस्से को खाते हुए सुरंग बनाता है तथा बाद में मुख्य तनों में प्रवेश कर जाता है। यह कीट, वृक्ष की लकड़ी को खाता है जिससे काफी क्षति होती है। प्रवेश स्थल से बाहर निकलता हुआ बुरादा, आम के वृक्ष में तना भेदक कीट की उपस्थिति को दर्शाता है। क्षति से पत्तियॉ पीली पड़ जाती हैं जिसके पश्चात् शाखाएँ सूखने लगती हैं। यदि कीट का प्रबंधन नहीं किया गया तो पूरा वृक्ष मर जाता है।

## जीवन चक्र

कीट का जीवन चक्र एक वर्ष का होता है तथा प्रत्येक वर्ष एक वंश का उद्‌भव होता है। वयस्क कीट (बीटल) सख्त, 50–55 मि.मी. गहरे भूरे (नर कीट) तथा मादा कीट 55–60 मि.मी. लंबाई के पीले हरे रंग के रोयेंदार होते हैं। मानसून (वर्षा) के प्रारंभ के साथ कीट रति क्रिया आरंभ करते हैं तथा मादा कीट 1 से 2 दिनों में अंडा देने लगते हैं। ये कीट 20–25 दिनों तक निरंतर अंडे देते रहते हैं। औसतन ये एक अंडा प्रतिदिन देते हैं। इन अंडों से 7 से 13 दिनों में कीट निकलते हैं। कीट के अंडे चमकीले सफेद, अंडाकार, 5–7 मि.मी. लंबे होते हैं। पूर्ण विकसित कीट (ग्रब) 85–95 मि.मी. लंबा, सख्त, खंडीय शरीर वाला, हल्के पीले रंग का होता है। इसका (प्यूपा) 50–55 मि.मी. लम्बा, पीले भूरे से गहरे भूरे रंग का होता है। कायांतरण, सुरंग में, 20–25 दिनों तक होता है। इनकी जीवन अवधि 170–190 दिनों की होती है तथा वयस्क 60–100 दिनों तक जीवित रहते हैं। कीट के प्रकोप का लक्षण नवंबर से दिसंबर में सर्वाधिक होता है।